आवागवन

लेखक : सय्यद मुस्तफ़ा हसन रिज़वी साहब सम्पादक साप्ताहिक "सरफराज़", लखनऊ
अनुवादक : तनवीर जहाँ रिज़वी साहिबा

इस्लामी धर्म के अनुसार दुनिया अमिट नहीं है बल्कि मिट जाने वाली है। इसका आदि भी है और अन्त भी। यह सदैव रहने वाली नहीं है अपितु एक दिन इसका भी अन्त होगा। यह परीक्षालय समान है और यहां के अच्छे तथा बुरे कामों का फल मृत्यु के पश्चात् मिलेगा।

परन्तु आर्य धर्म के अनुसार दुनिया हमेशा से है ओर हमेशा रहेगी, न इसका आदि है और न अन्त। इस धर्म के अनुसार जिस प्रकार ईश्वर सदैव रहने वाला है उसी प्रकार आत्मा और पदार्थ भी सदैव बाकी रहेगा। जिस प्रकार से एक कुम्हार मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तनों का निर्माण करता है उसी प्रकार से ईश्वर ने आत्मा और पदार्थ से अनेक प्रकार की चल और अचल वस्तुओं की सृष्टि की। जिस प्रकार से रसयन शास्त्र का जानने वाला अनेक प्रकार के रसायनिक पदार्थो की सहायता से एक नया पदार्थ उत्पन्न करता है उसी प्रकार से ईश्वर ने भी आत्मा और पदार्थ के सन्तुलन से अनेक प्रकार की वस्तुओं की रचना की। परन्तु ईश्वर ने स्वंय आत्मा और पदार्थ को नहीं बनाया।

इस सिद्धान्त का फल यह निकला कि उन्हें कर्म और फल के सम्बनध में एक बुद्धि में न आने वाला सिद्धान्त निर्धारित करना पड़ा जिसे आवागवन कहते हैं।

आवागवन का तात्पर्य यह है कि मनुष्य जैसे कर्म अपने जीवन में करता हैं उसी के अनुसार उसका पुनर्जन्म होता है। यह सिद्धान्त केवल मनुष्य पर ही लागू नहीं होता अपितु जानवरों, भौतिक पदार्थों पेड़ पौधों इत्यादि पर भी लागू हाता है। मृत्यु के पश्चात साधु के हत्यारे को ईश्वर गाय की शक्ल में पुनर्जन्म देगा। इसी प्रकार किसी के अच्छे कर्मो के फलस्वरूप अगले जन्म में उसे राजा बनाया जाएगा और किसी को भिखारी। इस प्रकार से अच्छे तथा बुरे कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म का चक्कर चलता रहता है जिसे आवागवन कहते हैं।

आर्यो की प्रारम्भिक गलती यह थी कि उन्होंने दुनिया को अमिट माना तथा ईश्वर की तरह आत्मा व पदार्थ को भी हमेशा से है और हमेशा रहेगा समझने लगे। और आवागवन के सिद्धान्त को सही मानने लगे।

इस प्रकार इस्लामी धर्म और आर्य धर्म एक दूसरे से भिन्न हैं।

आर्यों के अनुसार ईश्वर एक है। परन्तु उसने आत्मा तथा पदार्थ की रचना नहीं की। इस प्रकार, पदार्थ, आत्मा और ईश्वर तीनों एक ही कोटि में आ गए। यदि यह माना जाए कि यह तीनों वस्तुऐं हमेशा से हैं तो प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इनमें से किसे आत्मा तथा किसे आत्मा माना जाए। इन तीनों को एक दूसरे से भिन्न करने का कोई मापदण्ड आर्यों के पास नहीं है। यदि यह माना जाए कि जो ईश्वर में शक्ति तथा क्षमता है वह आत्मा और पदार्थ में नही। तथा जो पदार्थ में है वह आत्मा तथा ईश्वर में नही। तब इन तीनों में से कोई भी अपने स्थान पर पूर्ण नहीं हुआ और जो अपूर्ण है वह सदैव बाक़ी रहने वाला नहीं। एक समय वह आएगा जब वह समाप्त हो जाएगा।

इस सिद्धान्त पर आधारित जितने भी सिद्धान्त बनाए जाएंगे वह सब गलत होंगे। यही कारण है कि प्रलय के सम्बन्ध में भी आर्यों का सिद्धान्त ऐसा ही है जैसा, ईश्वर, आत्मा तथा पदार्थ का सिद्धान्त।

जब आर्यों ने देखा कि कोई राजा है, कोई भिखारी, कोई निर्धन है तथा कोई अमीर, कोई रोगी है तो किसी का स्वास्थ एंव अच्छा है तो इसका उन्होंने यह तात्पर्य निकाला कि यह उनके कामों का फल है। उनकी बुद्धि में यह धारणा न आई कि ईश्वर जिसे वह कृपालु तथा दयालु कहते हैं उसने ऐसा क्यों किया? यदि यह

मान लिया जाए कि ईश्वर ने ही किसी को इतना धन दिया जिससे वह विलासिता की वस्तुओं को प्रयोग में ला सके और किसी को इनता जीवित रखने के लिए रोटी को भी प्रयोग न कर सके तो यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर बड़ा निर्दयी है। इस कारण आर्यों ने यह समझ लिया कि यह सब मनुष्य के स्वंय कर्मों का फल है जो इस जन्म में मिल रहा है।

परन्तु यह मान लेना कि यह सब कर्मों का फल है उचित नहीं है। इसके कुछ और कारण है जो आर्यो की बुद्धि से परे है।

उदाहरण के लिए किसी मनुष्य के व्यय से उसकी आय बहुत अधिक है। बिना यह मालूम किये कि वह किस मद में अपनी आय व्यय करता है, यह सोचना उचित नही है कि उसने विलासता की वस्तुओं का प्रयोग किया है। सम्भव है कि वह मनुष्य विलासता की वस्तुओं को प्रयोग न करके निर्धनों तथा अनाथों की सहायता करता हो। और इसी कारण वह स्वंय भोग रहा हो। बस इसी प्रकार आर्यों ने बिना पता लगाए यह समझ लिया कि यह सब मनुष्य के कर्मों का फल है।

यह सत्य है कि यह दुनिया परीक्षालय समान है और ईश्वर के प्रत्येक नियम को समझ लेना सरल नहीं है। चाहे मनुष्य कितनी उन्नति क्यों न कर ले। ईश्वर ने अन्धकार को इस लिए उत्पन्न किया ताकि मनुष्य प्रकाश के महत्व को समझ सके। भयंकर बीमारियों को बनाया ताकि स्वास्थ के महत्व को समझाा जा सके। कष्ट भोगने के पश्चात ही आराम के महत्व को समझा जा सकता है। स्वास्थ खो जाने के पश्चात ही उसके महत्व को स्वीकार किया जा सकता है। जैसा कि ऊपर बताया गया कि दुनिया परीक्षालय समान है तथा मनुष्य परीक्षार्थी के समान है। परीक्षालय रूपी दुनिया में ईश्वर ने भिन्न भिन्न प्रकार से मनुष्य रूपी परीक्षार्थियों की परीक्षा ली। कुछ को निर्धन बनाया ताकि उनकी सामर्थ्य तथा कुशलता की परीक्षा ली जासके। और इसका पता लगाया जा सके कि भूख का कष्ट सहकर भी वह बुराई के पथ पर अग्रसर तो नहीं होता। कुछ मनुष्य को आंखों के प्रकाश से वंचित करके यह चेष्टा की, जिनकी आंखों में ज्योति है वह उनकी सहायता करते हैं अथवा नहीं। इस प्रकार ईश्वर मनुष्य की परीक्षा लेता है। इस से हम इस निष्कर्ष पर पंहुचते हैं कि आर्यों का यह सिद्धान्त कि सब मनुष्यों के कर्मों का फल है जो उन्हें इस जन्म में भोगना पड़ रहा है गलत है। परन्तु यदि इस नियम को मान लिया जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि उनका ईश्वर निर्दयी है। परन्तु आर्यों के अनुसार वह दयालु तथा कृपालु है। जो कुछ भी मनुष्य को दिया गया है वह ईश्वर का दान है मजदूरी नहीं। दान तथा मजदूरी में भिन्नता है। उदाहरण के लिए यदि हम मकान बनाने के लिए श्रमिकों की सहायता लें! उनके श्रम के बदले में हम उन्हें उनकी मजदूरी दें तो वह उसके पाने का अधिकारी है। यदि हम उसे उसके श्रम के बदले में कम मज़दूरी देंगे तो यह गलत होगा। परन्तु दान इससे भिन्न है। उदाहरण के लिए यदि हमारे द्वार पर दस भिखारी आए और हम किसी को अधिक भिक्षा दें किसी को कम तो किसी भिखारी को उसके सम्बन्ध में कुछ कहने का अधिकार नहीं है। हम निर्दयी भी नहीं कहे जा सकते क्योंकि जो कुछ उन्हें प्रदान किया गया वह किसी कार्य के बदले में नहीं प्रदान किया गया अपितु यह हमारा दान था। जिनता चाहा उनता दान दिया। इसीप्रकार कोई जो कुछ किसी को प्रदान करता है वह उसका दान है उसकी दया है। किसी को इसका अधिकार नहीं कि उससे शिकायत करे और न ही इस कारण से वह निर्दयी ठहरता है। यदि माली किसी पौधे को पानी से सींचे और किसी को सूखा रखे तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसने निर्दयता से काम लिया।

ईश्वर बुद्धिमान तथा सर्वशक्तिमान है। उसने जो परस्पर भिन्नता उत्पन्न की है उसका कोई न कोई कारण अवश्य है। हो सकता है कि ईश्वर ने हमें इस कारण कष्ट में रखा हो ताकि हम उससे अधिक कष्ट भोगने से बच सकें। इसका पता मुझे तब चला जब एक बार 1930—31 में लखनऊ में एक प्रसिद्ध डाकू के भय से लोग रात्रि में ठीक प्रकार से सो नही पाते थे धनवान को जरा सी आहट पर यह संदेह होने लगता था कि डाकू आ गए। परन्तु मैं रात को आराम से सोता था और बहुत प्रसन्न था कि ईश्वर ने मुझे धन से वंचित रखा। फिर मैं ईश्वर से क्यों शिकायत करूं।

इन समस्त कारणों का जिनके आधार पर ईश्वर ने परस्पर भिन्नता रखी समझना सरल नहीं है। परन्तु फिर भी मोटी मोटी बातें हमारी बुद्धि में आ जाती हैं। ऐसे अनेक उदाहरण दृष्टि के समक्ष हैं। हम देखते हैं कि जब किसी मनुष्य के पास धन-सम्पत्ति होती है तो वह बुराई के पथ पर चलने लगता है। और जब धन समाप्त होता है तो समस्त अच्छाइयाँ उसमें आ जाती हैं। उदाहरण के लिए अमवी वंश का बादशह अब्दुल मलिक जिसके समय में हिन्दुस्तान में सिन्ध के सूबे पर आक्रमण हुआ था, बादशाह बनने से पूर्व बड़ा ही अच्छा मनुष्य तथा ब्रम्हाचारी हुआ था। परन्तु जब बादशाह हुआ तो ऐसे ऐसे बुरे कर्म किए और प्रजा पर ऐसे अत्याचार किए जिसके विचार मात्र ही से शरीर में थरथरी उत्पन्न हो जाए। इससे इस निष्कर्ष पर पंहुचा जा सकता है कि जब ईश्वर किसी को धन सम्पत्ति से या किसी वस्तु से वंचित रखे तो यह भी उसकी कृपा है। जिसे हम समझ नहीं पाते। हो सकता है ईश्वर ने दुर्बलों को इसलिए शक्ति नहीं दीहो ताकि शक्ति के घमण्ड में वह किसी से दुर्व्यवहार तथा युद्ध न करें।

प्राकृति का नियम है कि जो भी मनुष्य किसी कार्य को जी लगाकर करेगा तो सफलता अवश्य उसके पग चूमेगी। उदाहरण के लिए दो किसान हैं, एक ठीक समय पर खेत जोतता और बोता हैं, आवश्यकतानुसार सिंचाई के साधनों को जुटाता है। ठीक समय पर फसल काटता है, तो उसके परिश्रम का फल उसे अधिक अनाज के रूप में मिलेगा। अनाज के अधिक अत्पन्न होने से धीरे धीरे किसान की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परन्तु जो किसान अकर्मठ तथा परिश्रमशील नहीं है, और न भूमि की उपजाऊ शक्ति में वृद्धि करने का प्रयास करता है, न ठीक समय पर बीज डालता है तो उसकी उपज भी उच्छी नहीं रहेगी। और उसकी आर्थिक स्थिति पहले से भी बुरी हो जाएगी। दोनों स्वयं ही अपनी आर्थिक स्थिति को बनाने या बिगाड़ने वाले हैं। इसको उनके पिछले जन्म के कर्मों का फल नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार शराबी अपने स्वास्थ को स्वंय नष्ट करता है। एक चोर अपने बुरे कर्मों के कारण जेल जाता है, न कि पिछले जन्म में किए कर्मों के कारण।

यदि इन सब बातों को पिछले जन्म के कर्मों का फल समझा जाए तो इसको क्या उत्तर होगा कि प्रारम्भ में जब आत्माओं को अच्छे या बुरे कार्य करने का अवसर नही प्राप्त हुआ था तो ईश्वर ने किसी को मनुष्य, किसी को जानवर, किसी को पेड़ पौधे किसी को चन्द्रमा सूर्य तथा तारा क्यो बनाया ? इसका तात्पर्य यही है कि आवागवन का सिद्धान्त ही गलत है।

आर्यों के अनुसार केवल उनका धर्म ही सत्य है और वही लोग सत्य के मार्ग पर अग्रसर हैं। उनके धर्म के अतिरिक्त समस्त धर्म चाहे वह ईसाई हों अथवा मुसलमान गलत रास्ते पर है।

हम देखते हैं कि पूरब तथा पश्चिम में बसने वाले मुसलमान धन, सम्पत्ति, स्वास्थ्य, शक्ति इत्यादि में हिन्दुओं से आगे हैं। हिन्दुओं के आवागवन के सिद्धान्त के अनुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने पिछले जन्म में अच्छे कार्य किए होंगे। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि फिर परमेश्वर ने उन्हें हिन्दु के बजाए मुसलमान क्यों बनाया ? यदि उन्होंने अच्छे कार्य किए थे तो उन्हें गलत रास्ते पर चलने वाली जाति में पैदा नहीं करना चाहिए था, अपितु किसी आर्य परिवार में उन्हें जन्म देना चाहिए था।

पेड़ पौधों तथा धातुओं में भी आवागवन के सिद्धान्त के अनुसार आत्म निवास करती है। यदि ऐसा है तो आर्य लोग पत्थरों को काट कर तथा तोड़कर मकान का निर्माण क्यों करते हैं ? पेड़ों की लकड़ी ईंधन के लिए क्यों प्रयोग मे ंलाते हैं, तरकारियों और लकड़ी का क्यों प्रयोग करते हैं? एक ओर तो वह मानते है कि जीव हत्या नहीं करना चाहिए। दूसरी ओर यह भी मानते हैं कि पेड. पौधों तथा पत्थरों व धातुओं में भी आत्मा निवास करती है फिर उनका प्रयोग भी करते है। इन सब वस्तुओं को उन्हें जब ही प्रयोग मे ंलाना चाहिए जब वह आवागवन के सिद्धान्त को गलत समझें।

आर्यों ने इस सिद्धान्त के अपवादों की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। यदि इस सिद्धान्त की सत्यता स्वीकार कर ली जाए तो डाक्टरों तथा वैद्य की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। क्योंकि यदि किसी को कोई रोग है तो पिछले जन्म के कर्मों के फलस्वरूप है। वह

जब ही समाप्त होगा जब उसके दण्ड का समय पूर्ण होगा। ईश्वर ने समस्त वस्तुओं का निर्माण मनुष्य के प्रयोग करने के लिए किया है, ताकि आवश्यकतानुसार वह उसको अपने काम में ला सके। जानवर इसलिए बनाए ताकि वह मनुष्य की खेती, सवारी, दूध मक्खन इत्यादि की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। पेड़ पौधे इसलिए बनाए ताकि मनुष्य अपने जीवन निर्वाह के लिए अनाज इत्यादि प्राप्त कर सके। यदि ईश्वर ने धातुओं तथा पत्थरों का निर्माण न किया होता तो मनुष्य को पहनने मे लिए आभूषण, रहने के मकान तथा खाने के लिए बर्तन कहां से प्राप्त होते?

सृष्टि की उत्पत्ति के समय जब कुछ स्त्रियों तथा पुरूषों के अतिरिक्त ईश्वर ने कुछ नहीं बनाया था, उस समय मनुष्य किस प्रकार अपना जीवन निर्वाह करता था?

आर्यों के आवागवन के सिद्धान्त का एक अपवाद यह भी है कि इससे इनका ईश्वर कृपालु नहीं सिद्ध होता। और न वह हमसे यह आशा करता है कि दीन दुखियों के साथ अच्छा व्यवहार करें इसलिए कि हमें जो कुछ भी प्राप्त हुआ है वह पिछले जन्म के कर्मों का फल है। ईश्वर की कृपा मात्र नहीं। वह ईश्वर का दान नहीं है अपितु हमारे अच्छे कर्मों का फल हैं। इस प्रकार आर्यों का ईश्वर न दयालु सिद्ध होता है और न कृपालु।

इस सिद्धान्त से यह भी सिद्ध होता है कि जो लोग किसी प्रकार का कष्ट उठा रहे हैं, उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करना चाहिए। क्योंकि उनके बुरे कर्मों के फलस्वरूप उन्हें दंड दिया जा रहा है। यदि हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो यह पाप होगा और हम भी दंड पाने के अधिक करीब न जाएंगे। जिस प्रकार यदि राजा किसी को दंड दे तो प्रजा का कोई अधिकार नहीं है कि वह उसकी किसी प्रकार से सहायता करें। इस प्रकार इस सिद्धान्त को सही मानने की दशा में किसी प्रकार का दान एक व्यर्थ वस्तु बन जाता है। और अनाथालय आश्रम एवं जनहित के लिए खोले गए औषधालय स्थापित करने की कोइ आवश्यकता नहीं रह जाती है।

आवागवन के सिद्धान्त को यदि उचित माना जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि यह सभी कारखाने पाप के ऊपर ही निर्भर है। यदि समस्त मनुष्य अच्छे बन जाऐं तो फिर चन्द्रमा, सूर्य पेड़ पौधे, पत्थर, धातु कोई भी वस्तु शेष नहीं रहेगी। कयोंकि जब मनुष्य पाप करता है तो मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा को पेड़ पौधे पत्थर धातु पशु इन्यादि के रूप में दुबारा प्रथ्वी पर जन्म दिया जाता है। इससे यह सद्ध होता है कि ईश्वर की यह इच्छा है कि पृथ्वी पर पाप होते रहें। ताकि यह क्रम यूँ ही चलता रहे और वह अनेकों प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करता रहे इसी प्रकार मनुष्यों की भी यह इच्छा होगी कि बुराइयों का कभी अन्त न हो। बल्कि उनमें बराबर वृद्धि होती रहे। इसलिए कि यदि पाप न होंगे तो ईश्वर अच्छे लोगों को क्या पुरस्कार देगा। उदाहरण के लिए किसी राम चरण नाम के पुरूष ने पिछले जन्म में एक ऐसा अच्छा कार्य किया था जिसके फलस्वरूप उसे इस जीवन में एक गाय मिलनी चाहिए थी। और ईश्वर ने साधु के हत्यारे की यह सजा रखी है कि अगले जन्म में उसे गाय का रूप दिया जाएगा। अब यदि पृथ्वी पर कोई मनुष्य साधु की हत्या नहीं करेगा तो गाय का निर्माण कैसे होंगा? और राम चरण को उसके अच्छे कर्म का फल कैसे मिलेगा? इसलिए रामचरन की यह इच्छा होनी चाहिए कि कोई मनुष्य साधु की हत्या करे ताकि उसे गाय की प्राप्ति हो सके। इसी प्रकार ईश्वर भी इसके लिए बाध्य है कि किसी मनुष्य के द्वारा साधु की हत्या करवाए ताकि रामचरन या उसी के ऐसे मनुष्यों को उनकी अच्छाइयों के बदले में गााय दे सके।

ऐसा नहीं है कि किसी प्रकार के कष्ट या पीड़ा का कारण पिछले जन्म के फल हों अपितु कभी कभी किसी अच्छे कार्य को करने के लिए भी कष्ट भोगना पड़ता है। किसी मनुष्य को आग से बचाने के लिए स्वंय भी अग्नि में जलना पड़ेगा। इसीप्रकार आवश्यकतानुसार भोजन न होने पर किसी भूखे को भोजन कराने पर स्वयं भूखे रहने का कष्ट सहन करना पड़ेगा। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि पिछले जन्म के कर्मों के फलस्वरूप भूख का कष्ट भोगना पड़ा।

पृथ्वी पर सहस्त्रों श्रषियों मुनियों ने जन्म

लिया। उनको ईश्वर ने इसीलिए पृथ्वी पर भेजा ताकि वह लोगों को अच्छे पथ पर अग्रसर करने की चेष्टा करें। उन्होंने इस मार्ग में बड़ी कठिनाइयों का सामना किया। क्या उनके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यह उनके पिछले जन्म का फल है? आर्यों को स्वयं अपने ऋषियों, मुनियों के जीवन पर दृष्टि डालना चाहिए और फिर न्याय की दृष्टि से यह विचार करना चाहिए कि आवागवन का सिद्धान्त ठीक हैं अथवा नहीं? रामचन्द्र जी को जिनको वह लोग ईश्वर का अवतार मानते हैं बनवास का कष्ट सहन करना पड़ा।

रावण द्वारा सताए गये यदि आवागवन के सिद्धान्त को सही मान लिया जाए तो क्या हिन्दु लोग इसे स्वीकार कर लेंगे कि रामचन्द्र जी को जितनी कठिनाइयाँ उठाना पड़ी वह सब उनके कर्मों के फलस्वरूप थी? इसी प्रकार भगवान कृष्ण को जो महाभारत के युद्ध में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्या वह उनके पापों का परिणाम थी? अच्छे कार्य की पूर्ति में तो कठिनाइयों से गुज़रना ही पड़ता है। तीर्थ स्थान की यात्रा को यदि कोई जाएगा तो उसे कष्ट भोगना ही पड़ेगा। इसी प्रकार तपस्या करने में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। गौतम बुद्ध ने तपस्या करने में कितनी कठिनाइयां उठाईं। इसका तात्पर्य यह तो नहीं है कि धर्म का पालन करने में जो मनुष्य कष्ट भोगता है वह भी उसके पिछले जत्म के बुरे कर्मों का फल है। क्या आर्य यह बात स्वीकार करेंगे कि तपस्या करने में जो गौतम बुद्ध ने कष्ट झेले वह उनके बुरे कर्मों के फल थे?

आवागवन के सिद्धान्त की सत्यता स्वीकार करने वालों के लिए धार्मिक पाठ तथा पूजा इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं रहती। जब दुख तथा सुख अपने ही कर्मों का फल हैं तो तपस्या इत्यादि की भी कोई आवश्यकता नहीं रहती ।

यदि पिछले जन्म में अच्छा कार्य किया है तो स्वयं हमे उसका फल मिल जाएगा। आवागवन के सिद्धान्त के मानने वालों के ईश्वर में इतनी सामर्थ्य नहीं कि वह दया करके बिना मांगे हमें कुछ दान करें। क्योंकि वह दयालु नहीं है और न अपनी ओर से हमें कुछ दे सकता है। इस सिद्धान्त से यह भी सिद्ध होता है कि ईश्वर क्षमा करना नहीं जानता। छोटे से छोटे पाप की भी वह दंड देगा। परन्तु बुद्धि बताती है कि सच्चे हृदय से यदि क्षमा मांगी जाए और आगे पाप न करने की सौगन्ध खाई जाए तो पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। परन्तु यदि कोई राजा अपनी प्रजा पर दया नहीं करता उनके क्षमा मांगने पर भी उनको माफ नहीं करता तो वह स्वयं भी प्रजा का प्रेमी नहीं बन सकता। यही हाल इस सिद्धान्त के मानने वालों के ईश्वर का है। जो किसी मनुष्य के ऐसे अपराध को भी माफ नहीं करता जो भूले से ही हो गया हो।

हम देखते हैं कि जब कोई अपराधी आपराध करता है, पुलिस उसे दंड दिलवाना चाहती है। जब उसे पूर्ण रूप से यह विश्वास हो जाता है कि कानून के हाथ से न बच सकुंगा और क्षमा न मिल पाएगी तो वह भाग निकलता है। इसी प्रकार इस सिद्धान्त के मानने वालों से यदि कोई पाप हो जाए तो उसे यह विश्वास करने का अधिकार है कि दंड अवश्य मिलेगा। माफ़ी नहीं मिल सकती तो वह सोचेगा कि जब क्षमा नहीं मिल सकती तो और अपराध क्यों न करें। इस प्रकार वह पुर्ण रूप से अपराधी बन जाएगा।

आर्यों में आत्मा को अमिट और स्वतंत्र माना गया है। ऐसी स्थिति में हो सकता है कुछ आत्माए एक शरीर को त्याग कर दूसरे में प्रवेश कर लें। इस सिद्धान्त के अनुसार आत्मा को बुद्धिमान भी माना गया है। यदि आत्मा में बुद्धि है तो यह भी आवश्यक है कि उसे पिछले जन्म की सब बातें स्मरण रहें परन्तु पेड़ पौधों का क्या प्रश्न कोई मनुष्य भी यह नहीं बता सकता कि उसने पिछले जन्म में कौन से अच्छे या बुरे कार्य किए। बुद्धिमान और स्वतंत्र आत्मा की वह विशेषताएं जो मनुष्यों में दिखाई पड़ती हैं पेड़ पौधों में क्यों दृष्टिगोचर नहीं होतीं? यदि उनमें भी वही आत्मा निवास करती है। परन्तु आर्यों के पास इसका कोई उत्तर नहीं है।

जब पेड़ पौधों, पत्थरों तथा मनुष्यों में आत्माएं पाप तथा पुण्य के आधार पर क़ैद की गईं तो उन्हें यह भी मालूम होना चाहिए था कि किस पाप का दंड भोगना पड़ रहा हैं। जब अपराधी को दंड के सम्बन्ध में बता दिया जाता है। अपराध बताने का कारण यह होता है

ताकि आगे वह ऐसा अपराध न करें। परन्तु आवागवन के सिद्धान्त के मानने वालों को अपने अपराध का ज्ञान नहीं होता इसके अतिरिक्त इसका भी ज्ञान नहीं होता कि किन अच्छे कामों का फल उन्हें मिल रहा है जिसके कारण वह सुख से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिन आत्माओं को पेड़ पौधे पत्थर इत्यादि में क़ैद किया जाता है उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। इसके अतिरिक्त यदि कोई आत्मा पत्थर से निकल कर मनुष्य के शरीर में प्रवेश करे तो उसे इसका भी ज्ञान नही होता कि वह पहले पत्थर में निवास करती थी अब यदि वह आत्मा शरीर में प्रवेश करने के पश्चात उस पाप से बचना चाहे जिसके कारण उसे पत्थर में प्रविष्ट किया गया था तो नहीं बच सकती क्योंकि उसे अपने पाप का ज्ञान ही नहीं है। जिसके कारण उसे दंडित किया गया था।

ऐसे कर्म तथा फल का क्या लाभ जिसके सम्बन्ध में यह भी ज्ञात न हो कि किस अच्छाई के कारण आराम तथा सुख और किस बुराई के कारण दंड भोगना पड़ रहा है। इसी प्रकार प्रलय का भी कोई अस्तित्व नहीं रहता।

हिन्दुओं की पुस्तकों से तथा ग्रन्थों में कुछ अपराधों की सज़ाएं लिखित हैं। और यह बताया गया है कि कौन कौन कौन से पापों के कारण आत्मा कौन कौन से शरीर में प्रविष्ट होगी। उदाहरण के लिए साधु के हत्यारे को अगले जन्म में गाय के शरीर में प्रविष्ट किया जाएगा। अनाज के चारे की आत्मा को चूहे के शरीर में प्रविष्ट किया जाएगा । तथा पानी के चारे को मेढ़क का रूप दिया जाएगा।

इस सिद्धान्त की कड़ी आलोचना की गई तथा अनेकों अपवाद बताए गए। इस सिद्धान्त की पुष्टि के लिए उसका समर्थन करने वालों के पास कोई तर्क नहीं है जिनको मैंने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

(इमामिया मिशन, लखनऊ, प्रकाशन नं0 675, मार्च 1973) ✦✦✦

मजलिसे चेहलुम

cjk; bZkysl olc

हैदर अब्बास इब्ने नज़ीर हुसैन

बतारीख़ : 31 जनवरी 2013, बरोज़ जुमेरात

बमक़ाम : इमामबाड़ा अबूतालिब, हसनपुरिया, मन्सूर नगर, लखनऊ

सोगवारान

रज़ा अब्बास, हसन अब्बास, काज़िम अब्बास, मो0 अब्बास, आशिक़ अब्बास, जाफ़र अब्बास, (पिसरान)

सै0 अख़्तर हुसैन, सै0 रफ़ीक़ हुसैन, (दामाद) व दुख़्तरान

मो0 09307302276

✦✦✦